B.A. I. Hindi Hons.

उपन्यास का स्वरूप

डॉ॰ सतीश चन्द्र पाठक
हिन्दी विभाग, एस॰एस॰ कॉलेज,
जहानाबाद

प्रिय छात्रों;
पिछले दिनों हमने साहित्य की विभिन्न विधाओं के सम्बन्ध में सामान्य जानकारी प्राप्त की है। हमारे पाठ्यक्रम में एक उपन्यास का विस्तृत अध्ययन करना है जिसका नाम है चित्रलेखा। किन्तु चित्रलेखा उपन्यास के अध्ययन के पूर्व हमें उपन्यास के सम्बन्ध में विस्तृत रूप से जानना चाहिए कि उपन्यास क्या है, इसके तत्व कौन-कौन से हैं तथा हिन्दी साहित्य में उपन्यास की क्या स्थिति रही है।

उपन्यास के सम्बन्ध में हम बता चुके हैं कि यह भारतीय साहित्य के लिए सर्वथा नयी विधा है। जब इस देश में अंग्रेजों का आगमन हुआ तब उनके साथ उनका साहित्य, उनका दर्शन, उनकी जीवनशैली उनकी मशीनें, उनकी सभ्यता एवं संस्कृति - सब कुछ आयी। चूंकि वे भारत के शासक बन चुके थे अतः उनका कुछ लोगों ने अनुकरण कर उनकी भाषा एवं साहित्य का अध्ययन आरंभ कर दिया। इसके अतिरिक्त अंग्रेजी आजीविका ~~था~~ तथा शासन की भी भाषा थी अतः इसका अध्ययन अनिवार्य हो गया था। फलतः इस भाषा ने पूरे देश पर व्यापक प्रभाव डाला। यह प्रभाव अनेक दिशाओं में दृष्टिगत होता है। चूंकि हम यहाँ पर उपन्यास पर विचार कर रहे हैं अतः हम इसी सन्दर्भ में

इस प्रभाव का अध्ययन करेंगे।

अंग्रेजों के सम्पर्क में सर्वप्रथम बंगाल आया जिसके कारण यह भाग अंग्रेज एवं अंग्रेजी भाषा से सर्वाधिक प्रभावित हुआ। अंग्रेजी में नॉवेल नाम की एक गद्यात्मक विधा है जिससे प्रभावित होकर बंगला में 'नवलकथा' का प्रचलन हुआ। इसी से प्रभावित होकर हिन्दी में उपन्यास का प्रादुर्भाव हुआ।

उपन्यास शब्द पर व्युत्पत्ति की दृष्टि से विचार करें तो इसे दो भागों में बांट सकते हैं - उप+न्यास। उप का अर्थ है निकट और न्यास का अर्थ रखना। अर्थात् निकट रखी हुई वस्तु। साहित्यिक विधा के सन्दर्भ में इसका अर्थ हुआ कि वह साहित्यिक कथात्मक विधा जो जीवन को अत्यधिक निकट रखे है। वैसे उपन्यास शब्द भारतीय शास्त्रों के लिए नया नहीं है। इसका प्रयोग प्रसन्न करने के अर्थ में हुआ करता था - 'उपन्यासः प्रसादनम्' किन्तु एक विधा के रूप में उपन्यास का प्रयोग इस अर्थ में उचित प्रतीत नहीं होता।

उपन्यास की परिभाषा अनेक विद्वानों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से दी है और सभी में शब्दों की भिन्नता होते हुए भी तात्विक दृष्टि से समानता पायी जाती है। डॉ० श्यामसुन्दर दास ने मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा को उपन्यास कहा है। बाबू गुलाब राय की परिभाषा बहुत बड़ी एवं अतिव्याप्ति दोष से युक्त है। वैसे प्रेमचन्द की परिभाषा सबसे उपयुक्त एवं व्यापक मानी जाती है - 'उपन्यास को मैं मानव-चरित्र का चित्रमात्र समझता हूँ। मानव चरित्र पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मूलतत्व है।

tes
one
nail